अ ध्या य - ७

स मा प न

पृष्ठ १३५ से १४०

अध्याय – ७

स मा प न

कवि शिवमंगल सिंह "सुमन" जी हिन्दी साहित्य के प्रमुख प्रगतिशील कवियोंमें से एक है । साहित्य के क्षेत्र में कदम रखते हुये उन्होंने अपनी प्रेयसी के आकर्षण में प्रणयी कविताएँ लिखी हैं मगर आगे चलकर श्रमिकों की शोषणजन्य व्यथा उनके काव्य की प्रमुख प्रेरणा बन गई हैं । आज "सुमन" प्रगतिशील कवियों में अपना महत्व-पूर्ण स्थान हासील कर चुके है ।

"हिल्लोल", "जीवन के गान", "प्रलय-सृजन", "विश्वास बढ़ता ही गया", यह उनकी महत्त्वपूर्ण प्रगतिशील रचनाएँ हैं । "पर आँखे नहीं भरीं" यह काव्य रचना उनके मानवता वादी विचारों से ओतप्रोत हैं ।

"हिल्लोल"में युवा हृदय की उत्तेजना के साथ क्रांति के दबे हुए स्वर हैं । क्रांति का बिड़ा उठाने वाले सदियों से शोषित जन समूह का कवि उत्साह भरे हृदय से स्वागत करने की तैयारी करते हैं ।

"जीवन के गान" में कवि वर्तमान परिस्थितियों से असंतुष्ट और क्षुब्ध होकर विद्रोह करते हैं ।

"प्रलय-सृजन" में कवि विप्लवी हो जाते हैं । यहाँ पर कवि का दृष्टिकोण मार्क्सवादी है । मगर कवि मार्क्सवाद का अंधानुकरण मात्र नहीं करते है ।

"विश्वास बढ़ता ही गया" में कवि व्यापक साम्यवादी विचारों के धरातल पर उतर आये हैं । तुलनात्मक दृष्टि से "जीवन के गान" और "प्रलय-सृजन" को कवि बहुत पीछे छोड़ चुके हैं । तलखी भरे बागी और अपक्व

वैचारिक आयात को बहुत हद तक अमान्य करते हुए कवि "सुमन"ने मार्क्सीय वैज्ञानिक भौतिकवाद को भारतीय सांस्कृतिक आस्था में विनिमज्जित करने का प्रयत्न किया है । विदेशी साम्यवाद को भारतीय समतावाद में परिवर्तित करने और अपनी समस्याओं को निजी शैली और अर्थ देने का प्रयास "सुमन" जी ने "विश्वास बढ़ता ही गया" में किया है ।

"पर आँखें नहीं भरीं" में कवि ने मानवतावादी विचारों की पूजा की है । विद्रोह और प्रलय की भाषा करनेवाले कवि "सुमन" मानवतावाद की पूजा करते हुए गांधी को मानव-मुक्ति के अग्रदूत के रूप मे देखते हैं ।

उपरोक्त काव्यकृतियों में कवि "सुमन" जी की प्रगतिशील उपलब्धियाँ नजर आती हैं । इसमें संदेह नहीं कि कवि की ये काव्यकृतियाँ प्रगतिशीलता का प्रतिनिधित्व करती हैं ।

कवि शिवमंगल सिंह "सुमन" प्रगतिशील होने के कारण यथार्थवादी हैं अत: उन्होंने सामाजिक समस्याओंका यथार्थ सजीव चित्रण किया है । गरीबी, बेकारी, अंधश्रद्धा, सम्प्रदायिकता, सामाजिक विषमता आदि बातोंपर तीखा व्यंग्य करते हुए उन्होंने जीवन की समस्याओं पर अपनी लेखनी उठाई है । धर्म ईश्वरवाद और रूढ़ियों का कड़ा विरोध कर मनुष्य की महत्ता सिद्ध करने में "सुमन" की लेखनी सफल रही है । कवि शिवमंगल सिंह "सुमन" ने अपने काव्य में प्रगतिवाद के असंतोष, विद्रोह, अनास्था आदि को ग्रहण कर लिया है सामाजिक तथा नैतिक रूढ़ियों के प्रति आक्रोश व्यक्त किया है तथा अध्यात्मिक विश्वासों के प्रति संदेह प्रकट किया है ।

नारी के प्रति "सुमन" जी का प्रगतिशील दृष्टिकोण है । बालविवाह, नारीदास्य जैसी कल्पनाओं पर आघात किया है । स्त्री को मानवतापूर्ण व्यवहार से अधिकार सौंपने की माँग कवि शिवमंगल सिंह "सुमन" जी करते हैं ।

SHIVAJI UNIVERSITY

कवि शिवमंगल सिंह "सुमन" अपने प्रथमोत्थान में सहृदयी प्रेमी लगते हैं मगर आगे चलकर उनकी प्रेम भावना विश्व व्याप्त वेदनाओं को स्पंदित करती है । शोषित मानव की व्यथा देखकर कवि प्रेयसी के प्यार को ठुकराकर अपने कर्तव्य पथ पर मार्गस्थ होते हैं ।

आशा एक ऐसी जंजीर है जिसे पावों में डाले बिना मनुष्य चल नहीं सकता । हर मनुष्य आशा के पीछे दौड़ा रहता है । कवि"सुमन"आशावादी है पर केवल स्वप्नों को सजाने का काम उनकी आशावादी दृष्टि कभी नहीं करती । कवि "सुमन" की जीवन से निराशा नहीं है । उन्हें मनुष्य के कर्तृत्व में विश्वास है इसलिए वे मनुष्य के भविष्य में आशा रखते हैं । मुर्दों में प्राण फूंकने की भाषा सुनकर कवि के व्यक्तित्व से पौरुषशीलता भी उभर आती है । यह उनकी गर्वोक्ति नहीं बल्कि आत्मश्लाघा है । यहीं आत्मसम्मान उन्हें प्रगतिशीलता के मार्गपर दृढ़व्रति बना देता है ।

श्रमिक और पददलितों की परवशता देखकर उनका हृदय तड़प उठता है । वे पददलितों के प्रति सहानुभूति दिखाते हैं । उनकी मुक्ति की घोषणा कवि "सुमन" देते हैं । दलित पीड़ित पगपग पर अपमानित समाज के अंग के वे जबरदस्त वकील सिध्द हुए हैं । वे श्रमिक और पददलितों के मुक्तिदाता बनकर समाज के सामने आते हैं और क्रांति की घोषणा करते हैं ।

पूँजीवाद और साम्राज्यवाद के कवि जबरदस्त विरोधक हैं । धनिकों के महलों की सेवा उन्हें घृणित लगती है । पददलित वर्ग के प्रति उनका निर्मम व्यवहार देखकर कवि चौंकना उठते हैं और विषम समाज व्यवस्था को दूर करना चाहते हैं । इसलिए अपने सामने केवल सामाजिक क्रांति का मार्ग ही "सुमन" को खुला दिखता है ।

"सुमन" सामाजिक समता के लिए क्रांतिका अपिल तो करते हैं मगर वे क्रांति के रचनात्मक स्वरूप को स्वीकृत करते हैं विध्वंसात्मक स्वरूप को नहीं । क्यों कि"सुमन" जी अहिंसावादी है । अपनी बौध्दिक रुझान के कारण वे सर्वहारा वर्ग की दयनीय दशा की ओर खींच अवश्य गये हैं, किन्तु उस पर सत्य और अहिंसा का अंकुश लगा हुआ है । इसीलिए उनकी क्रांति-भावना, घृणा, क्रोध और हिंसा का स्पर्श नहीं कर सकी है । उनकी रचनाओं मे कहीं भी संहार की प्रेरणा नहीं, सृजन की प्रेरणा है । उनकी रचनाओं में क्रांतिकारी स्वर के लोकप्रिय होने का यह भी कारण हो सकता है ।

सामाजिक क्रांति के द्दारा कवि "सुमन" एक ऐसा साम्यवादी समाज निर्माण करना चाहते हैं जिस समाज व्यवस्था में हर मनुष्य को अपने हक और दो वक्त की रोटी पाने का पूर्ण अधिकार हो । मनुष्य का मनुष्य के प्रति समतापूर्ण व्यवहार हो । कवि "सुमन" की साम्यवादी समाज रचना की कल्पना, गांधी की रामराज्य कल्पना से गहरा संबंध रखती है, जिसमें कोई नीच या कोई ऊँच न हो ।

इसीलिए कवि लाल क्रांति का या उसके प्रतीक के रूप में होनेवाले सोवियत रूस का गौरवगान करते हैं । सोवियत रूस को अखिल विश्व के मानव मुक्ति का केन्द्र मानकर विश्व के हर दलित व्यक्ति की तीर्थ भूमि के रूप में घोषित करते हैं । "लाल सेना" को मानव मुक्ति की वाहिनी के रूप में स्वीकृत किया गया है ।

प्रगतिशीलता के प्रभाव में साम्यवादी राष्ट्रों का आकर्षण कवि के मन में हैं फिर भी उनकी राष्ट्र के प्रति कृतज्ञता की भावना में तनिक भी आँच नहीं आ पाई है । कवि शिवमंगल सिंह "सुमन" अपने राष्ट्र के प्रति गहरा प्रेम रखते हैं और उसे आज़ाद करने के लिए सैनिक बनकर अपना आत्मसमर्पन करना चाहते हैं । उनकी राष्ट्रीय भावनाओं मे राष्ट्रीय सम्मान का प्रवाह ओतप्रोत नज़र आता है ।

परिवर्तन की आस और प्रगतिशीलता के प्रभाव में कवि चाहे क्रांति की घोषणा क्यों न करें, प्रलय को चुनौति क्यों न दे मगर उनका मन हर दम भारतीय संस्कृति से जुड़ा हुआ है । हमें हर दम यह बात महसूस होती है कि उन्हों ने कहीं भी भारतीय संस्कृति और विचारों से संबंध विच्छेद नहीं किया है । जहाँ तक हो सके उन्होंने क्रांति की घोषणा करते हुए भी यही सतर्कता रखी है कि हम अपने विचारों से कहीं दूर न चले जायें । इन बातों का प्रमाण उनके मानवतावादी विचार हैं । कवि "सुमन" भी मानवता के पुजारी महसूस होते हैं । उनके मानवतावादी विचार अखिल विश्व के मनुष्य के कल्याण की कामना करते हैं ।

महात्मा गांधी जी को कवि मानव मुक्ति के अग्रदूत के रूपमें घोषित करते हैं । हमारे देश में मानवता के क्षेत्र में अविरत सहयोग देने वाले महामानवों के प्रति कविने श्रद्धा-सुमन अर्पित किये हैं । गांधी की हत्या उन्हें हमारे मानवतावादी आदर्शोंकी हत्या महसूस होती है । गांधी की हत्या से कवि व्यथित है ।

"सुमन" के प्रगतिशील विचारों का मूल भाव मानव-मुक्ति की कामना के रूप में रहा है । हिन्दी के कतिपय विद्वानों ने "सुमन" जी के यथार्थवादी मार्क्सवादी भी कहा है किन्तु "सुमन" की काव्ययात्रा में प्रगतिशील विचारों का पलड़ा भारी है । उनके विचार और व्यक्तित्व में प्रगतिशीलता मुखर हो उठी है । हिन्दी भाषा के प्रगतिशील साहित्य में कवि शिवमंगल सिंह "सुमन" का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है । उनकी प्रगतिशील काव्यकृतियों से आधुनिक हिन्दी साहित्य का भांडार संपन्न और समृद्ध बना है यह कहने में कोई अनुचित नहीं होगी ।

कवि शिवमंगल सिंह "सुमन" जी के रचनाओं के आशय के बारे में जो कुछ भ्रम है वह केवल उनकी आरम्भिक रचना ओं के आधार पर बनायें हैं । पुष्प की गंध और सौंदर्य का मूल्यांकन उसकी विकसित अवस्था के आधार पर ही होता है । इसलिए प्रगतिशील "सुमन" "प्रलय-सृजन" और "विश्वास बढ़ता ही गया" के "सुमन" है । प्रगतिशीलता और प्रगतिवादिता जैसे न्यूनतम भेदों की कोई तुक नहीं है । क्यों कि प्रगतिवादिता एक विशेष संवेदना वाली युगधारा है जब कि प्रगतिशीलता किसी भी युग की गतिशील रचना के साथ जोड़ी जा सकती हैं । अत: यहाँपर हम प्रगतिशीलता और प्रगतिवादिता को पर्यायवाची मानते हैं ।

अत: स्पष्ट है कि कवि शिवमंगल सिंह "सुमन" प्रगतिशील कवियों के उच्चतम् पंक्ति में बैठने वाले कवियों के सहयोगी और प्रतिनिधि कवि रहे है । उनके प्रगतिशील विचारोंने भारतीय परिवर्तन के आंदोलन में महत्वपूर्ण सहयोग दिया है इसमें संदेह नहीं ।

×××